एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agrilrticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गर्मियों मैं सब्जियों की उन्नत पौधशाला तैयार करना

(*पुष्पेंद्र सिंह चौधरी एवं के. थम्पासना)
कृषि महाविद्यालय, शेखावाटी संस्थान (श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर से संबद्ध)
* 123swift16@gmlil.com

सब्जियों को मुख्य रूप से बीजों के माध्यम से उगाया जाता है इसके लिए किसान कृषि विशेषज्ञों के सुझाबों के आधार पर महंगे बीज खरीद कर लाते है | इन बीजों से कैसे उन्नत पौधे तैयार करे इस बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता हैं और किसानो को सफलता नहीं मिल पाती है|

पौधशाला की तैयारी एवं भूमि शोधन करना:

पौधशाला की तैयारी करने के लिए मिट्टी की गहरी जुताई करे एवं मिट्टी को भुरभुरा बनाने के बाद सभी प्रकार के खरपतवार निकाल दे | प्रति वर्ग मीटर में 2 कि.ग्रा. की दर से वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी गोबर की खाद अच्छी तरह से मिला दे| यदि मिट्टी किले (भारी) प्रकार की है तो 2 -3 कि.ग्रा बालू रेत को मिलाये| भूमि शोधन कई प्रकार से किया जा सकता है एवं इसका मुख्य उद्देश्य मृदा मे पहले से उपस्थित हानिकारक जीवाणुओं से पौधों एवं बीजों को हानि पहुंचने से बचाना होता है| भूमि शोधन करने हेतु कई प्रकार की तकनीक उपयोग मे ली जा सकती है|

सॉइल सोलेराइजैशन:

उत्तर भारत में गर्मियों के महीने मुख्यतया मई - जून मे जब सूर्य अपनी फुल छमता के साथ चमकता है और बायुमण्डल का तापमान 45 - 5o डिग्री सेल्सियस होने पर, जितने भू भाग पे पौध तैयार करनी हो, उस भाग को हल्की जुताई करने के बाद सिंचित करने के पश्चात उस भाग को 96 -120 घंटो के लिए 200 गेज मोटाई की पॉलिथीन की सफ़ेद परत से ढक दिया जाता है| इस प्रकार की क्रिया को फॉलो करने से मृदा में उपस्थित समस्त प्रकार के हानिकारक जीवाणु एवं खरपतबार के बीजों को नष्ट किया जा सकता है | इसके बाद उस भाग की अच्छे निडाई- गुड़ाई करके क्यारियाँ बनाकर बीजों की बुआई करे|

फफूंदनाशी का उपयोग:

फफूंद मुख्य रूप से बीजों की बीजाई करने के पश्चात बीजों के अंकुरण मे अवरोध पैदा करते है क्योकि फफूंद बीजों को नष्ट कर देते है | अतः इस समस्या को दूर करने हेतु मृदा मे बाविस्टिन, मैंकोजेब या मेटलैक्सिल की 5 - 6 ग्रा. प्रति मीटर की दर से पौधशाला मे 15 से.मी. गहराई मे अच्छी तरीके से मिलाना चहिये. यदि उपयोग करने में किसी प्रकार की असुविधा होने पर समान मात्रा को वर्मीकम्पोस्ट के साथ क्यारियों मे डालकर मिट्टी मे मिलाये|

कीटनाशक का उपयोग:

भूमि मे अनेक प्रकार के सूछमजीव एवं कीड़े पाए जाते है जो की अनुकूल मौसम या बातावरण मिलने पर सक्रिय हो जाते है जो पौधों को हानि पहुंचाते है इस तरह पौधों को बचाने हेतु कीटनाशी का छिड़काव या furadon की 5 ग्रा मात्रा को क्यारियों में मिलाने के बाद बीजों की बुआई करे |

पौधशाला तैयार करने हेतु स्थान का चुनाव करना:

1) पौधशाला तैयार करने हेतु ऐसे स्थान का चुनाव करे जहां की जमीन थोड़ी ऊँची हो एवं कुछ 5 - 10 प्रतिशत का ढलान होना जरुरी है जिससे बारिश का पानी क्यारिओं में न रुके
2) पौधशाला का स्थान ऐसा होना चाहिए जहां सारे दिन प्रकाश उपलब्ध हो जिससे पौधे अच्छी तरीके से विकास कर सके
3) सिंचाई का मुख्य स्रोत एवं पौधशाला घर के नजदीक होना चहिये जिससे पौधों की देखभाल आसानी से की जा सकती है
4) पौधशाला के लिए उपयुक्त मृदा भुरभुरी एवं pH का मान उदासीन होना जरुरी है जिससे बीजों का अंकुरण आसानी से हो सके |

पौधशाला मे क्यारी तैयार करना:

पौधशाला में मौसम के अनुकूल क्यारियां तैयार की जाती है जैसे समतल , उभरी एवं संकरी. मुख्यतया बारिश के मौसम में उभरी हुई नर्सरी बेड एवं गर्मियों में समतल नर्सरी बेड तैयार किये जाते हैं| सामान्यतया 3 - 5 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ाई वाम 15 -20 से. मी. उठी हुई बेड तैयार की जाती है| दो बेड के मध्य 50 cm का अंतराल होना जरुरी है जिससे की बारिश का पानी इन नाली के माध्यम से बाहर निकल जाता है|

क्यारियों में बीजाई करना:

बीजाई करने के लिये बीजों को बीजोपचारित करने के बाद बेड पर बनी क्यारियों में बीजाई करें| क्यारियों में बीजों को ०.5 cm गहराई पर एवं 1 cm की दुरी पर बीजों की रोपाई करे| बीज बोन के बाद इन्हे वर्मीकम्पोस्ट, सैंड से ढक दिया जाता है| इस प्रकार से तैयार पौधों में पदगलन की समस्या को दूर किया जा सकता है एवं सवस्थ पोधो को तैयार किया जा सकता है क्यारियों में बीजाई करने के बाद उन्हें घास फूंस से ढक दिया जाता है जिससे मृदा में नमी बनी रहे

क्यारियों में नमी को बनाए रखना:

क्यारियों में नमी को बनाए रखने हेतु, बीज बुआई के बाद घास फूंस या सूखे पत्तों की पतली परत से ढक देना चाहिए इससे मृदा में नमी बनी रहती है और सिचाई करने पर पानी का सीधा प्रभाव मृदा में ढके हुए बीजों पर नहीं पड़ता

पौधशाला में सिंचाई करना

बीजों की पौधशाला में बुआई के बाद, मृदा में हल्का पानी का छिड़काव करे और अगले दिन से एक हफ्ते तक झारे या स्प्रे पाइप की सहायता से सिचाई करे| बीजों के अंकुरण के बाद, घास फूंस की परत हटा लेवे और आवश्यकता के अनुसार खुली सिंचाई करे एक माह में पौधों को मुख्य खेत में स्थान्तरित किया जा सकता है| पौध को उखाड़ने से 4 - 5 दिन पहले सिंचाई करना बंद कर दे ताकि पौधों में प्रतिकूल वातावरण को सहन करने की छमता विकसित हो जाये एवं पौधे कठोर हो जाते हैं पौध उखाड़ने से पहले हल्की सिचाई करे जिससे पौध को आसानी से जड़ सहित मृदा से उखाड़ा जा सकता है|

पौधशाला में नए अंकुरित पौधों में लगने बाले रोग एवं प्रवंधन:

पौधशाला में नए अंकुरित पौधों पर विषाणु जनित एवं कवक जनित रोगों के लगने की संभावना होती है|

1) **पत्तिमोड़क विषाणु**

यह विषाणु जनित रोग जो वाहक के द्वारा मुख्य रूप से सफ़ेद मक्खी के द्वारा फैलता है| यह विषाणु रोग सफ़ेद मक्खी के द्वारा कीटाणु को एक पौधों से दूसरे पौधे में फैलता है | इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्ती सिकुड़कर टेडी मेडी , घुमावदार एवं छोटी हो जाती है एवं इससे बचाव के लिए मृदा में furadon 3 - 5 ग्राम प्रति वर्गमीटर की दर से मिला दे और बीज जमने के बाद मोनोक्रोटोफॉस 1.5 मि.ली. प्रति 1 लीटर पानी में घोलकर मृदा में ड़ाल दे|

2) **पदगलन रोग**

पदगलन रोग जो विभिन्न प्रकार के फफूंद जैसे पीथियम, फियुसेरियम आदि के द्वारा होता है इससे प्रभावित पौधे जमीन की सतह से गलकर गिर जाते है और पौधा सूख जाता है इस रोग के उपचार के लिए बाविस्टिन 2.5 ग्राम प्रति लीटर का घोल बना कर मृदा में दाल दे इससे रोग का प्रभाव कम हो जाता है|